भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2758

<u>दिनांक 16 दिसंबर, 2025 को उत्तर दिए जाने के लिए</u>

बढ़ता व्यापार घाटा

2758. श्री बृजेन्द्र सिंह ओला:

क्या **वाणिज्य और उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारत का व्यापार घाटा हाल ही में बढ़ा है;

(ख) यदि हाँ, तो इसके मुख्य कारण क्या है और विशेष रूप से निर्यात सेवाओं में सितंबर 2025 के दौरान 5.5 प्रतिशत की कमी दर्ज होने तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) गत पांच वर्षो एवं चालू वर्ष के दौरान चीन के साथ आयात एवं निर्यात की मात्रा के ब्यौरे सहित वर्ष-वार एवं प्रतिशत तुलना संबंधी व्यौरा क्या है?

उत्तर
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री जितिन प्रसाद)

क) वैश्विक अनिश्चितता, भू-राजनीतिक अस्थिरता और प्रमुख बाजारों में असमान मांग के बावजूद भारत का निर्यात कार्य-निष्पादन निरंतर मजबूती को दर्शाता है। इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं, कृषि संबंधी श्रेणियां जैसे अन्य अनाज, मांस, डेयरी और मुर्गी उत्पाद, चाय, समुद्री उत्पाद, कॉफी, चावल और फल एवं सब्जियां कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें मजबूत विस्तार देखने को मिल रहा है। सोने और चांदी की उच्च आवक शिपमेंट से पण्यवस्तु आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सोने के आयात में वृद्धि का मुख्य कारण इसकी इकाई कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि है। चांदी के आयात में उल्लेखनीय वृद्धि का कारण इसकी अंतरराष्ट्रीय कीमत में वृद्धि और सौर पैनल, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिक वाहन और फार्मा जैसे क्षेत्रों में बढ़ी हुई औद्योगिक मांग है। इन सभी कारणों से व्यापार घाटे में वृद्धि हुई है।

भारत के विशाल विदेशी मुद्रा भंडार को देखते हुए, देश का व्यापार घाटा आसानी से प्रबंधनीय स्थिति में है। इसके अलावा, भारत वर्तमान में प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से विकास करने वाला

देश है और यह विकास पैटर्न स्वाभाविक रूप से इसके व्यापारिक गतिशीलता को प्रभावित करता है। भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि आयात की मांग को बढ़ा रही है, क्योंकि तेजी से विकास मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, औद्योगिक इनपुट और ऊर्जा की आवश्यकता को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप, मजबूत घरेलू मांग, निवेश-आधारित विस्तार और ऊर्जा पर अत्यधिक निर्भरता के कारण उच्च विकास को उच्च आयात में परिवर्तित कर देते हैं, जो विनिर्माण विस्तार को बनाए रखने और भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने के लिए आवश्यक है।

ख) आरबीआई द्वारा उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, सितंबर 2025 के दौरान सेवाओं के निर्यात में सितंबर 2024 की तुलना में 12.5% की सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है, न कि गिरावट, जैसा कि बताया गया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि आरबीआई द्वारा जारी किए गए तिमाही भुगतान संतुलन (बीओपी) के आंकड़े लगभग तीन महीने के अंतराल के साथ आते हैं और तिमाही आंकड़े जारी होने के बाद उनमें संशोधन किया जा सकता है।

ग) यह ध्यान देने योग्य है कि चीन के साथ मात्रा-आधारित एकत्रित व्यापार डेटा उपलब्ध नहीं है। डीजीसीआईएंडएस विभिन्न इकाइयों के साथ उपलब्ध होने पर एचएस/पीसी स्तरों पर मूल्य-आधारित एकत्रित डेटा और मात्रा प्रदान करता है। चूंकि वस्तुओं को विभिन्न इकाइयों में मापा जाता है, इसलिए एकत्रित मात्रा डेटा प्रदान नहीं किया जा सकता है। अतः आयात और निर्यात की "मात्रा" के संदर्भ में मांगी गई जानकारी अनुरोधित रूप में उपलब्ध नहीं है।

मूल्य के संदर्भ में, चीन के साथ भारत का व्यापार निम्नवत है:

पिछले 5 वर्षों में चीन के साथ भारत का व्यापार (बिलियन अमेरिकी डॉलर) मूल्य के संदर्भ में:

वर्ष	पणयवस्तु निर्यात	वृद्धि%	पणयवस्तु आयात	वृद्धि %
2020-21	21.19	27.53	65.21	-0.07
2021-22	21.26	0.36	94.57	45.02
2022-23	15.33	-27.90	98.51	4.16
2023-24	16.67	8.70	101.74	3.28
2024-25	14.25	-14.49	113.45	11.51
अप्रैल-अक्टूबर 2025	10.02	24.58	73.99	11.89

स्रोतः डीजीसीआईएंडएस

*****